कक्षा पहली

2. हिंदी (प्रथम भाषा)

(पहली से पाँचवीं कक्षा के लिए)

उद्देश्य :–

प्राइमरी के पाँचवें वर्ष के अन्त तक पढ़ाई का निम्नलिखित स्तर प्राप्त करने का दृष्टिकोण ध्यान में रखा जाए :–

मौखिक :

(क) बच्चे में वर्णों के मेल से अर्थपूर्ण शब्द बनाने की योग्यता का विकास करना ।

(ख) बच्चे में सही–सही, ध्यान से और मन्तव्य से सुन सकने की योग्यता का विकास करना, जिससे :

1. वह संदेश को सुनकर उसे ठीक ढंग से समझ सके;
2. वह किसी वार्ता या भाषण को सुनकर इस सम्बन्ध में कुछ प्रश्नों के उत्तर दे सके;
3. भाषण या वार्ता आदि सुनकर वह अपनी रूचि की बातों की ओर आकृष्ट हो सके।

(ग) बच्चे में प्रभावशाली ढंग से बोलने की ऐसी क्षमता उत्पन्न करना जिससे वह सही एवं अनुरूप विधि से :–

1 बोली की प्रत्येक ध्वनि का अलग–अलग व सही उच्चारण करने की क्षमता अर्जित कर सके;

2 सही– सही उच्चारण और वाक्यों के उतार–चढ़ाव के साथ बोलने की विधि सीख ले,

3 व्याकरण की दृष्टि से सही वाक्य बोल सके;

4 अपने जीवन, स्कूल, घर और आस–पड़ोस के बारे में निधड़क रूप से बातचीत कर सके।

5 साधारण कहानियाँ सुना सके;

6 अपने द्वारा किए गए काम का संक्षेप में उल्लेख कर सके;

7 समूह में या अकेले ही किसी छोटी कविता को प्रभावशाली ढंग से सुना सके;

8 अपने विचारों को सही तथा स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने के लिए शब्दावली का चयन कर सके ।

पढ़ाई

(क) विद्यार्थी में ज़ोर से, साफ, स्पष्ट व रूचि से पढ़ाई की योग्यता पैदा करना, जिससे;–

1 वह पढ़े हुए शब्दों पर उचित बल दे सके और उचित (शुद्ध) उच्चारण कर सके;

2 वह पढ़ी हुई सामग्री का अर्थ व मंतव्य समझ सके ।

(ख) वह अर्थ–ग्रहण करता हुआ उचित गति से पढ़ सके, जिससे :

1 वह चुपचाप बिना होठ हिलाये पढ़ सके ;

2 वह पढ़ी हुई रचना के अंश में आए विचारों के सम्बन्ध में प्रश्नों के उत्तर दे सके;

3 वह बाल–साहित्य व हस्त–लिखित साधारण पत्रों को पढ़ सके ;

4 ज्ञान और आनन्द प्रदान करने वाली पुस्तकों के प्रति मन में आदर की भावना पैदा हो सके;

5 नये शब्दों और मुहावरों का वाक्यों मे प्रयोग करना सीख सके ।

लिखाई :

क) विद्यार्थी में उचित ढंग से स्पष्ट, सही, संक्षिप्त और प्रभावशाली ढंग से लिखने की योग्यता पैदा करना, जिससे :

1 उसे अक्षरों या वर्णों के सही रूप व आकार की जानकारी हो और इनको लिखने की ठीक विधि आ जाये;

2 उसे सीखे हुए शब्दों के सही वर्ण–योग का ज्ञान हो;

3 उसे विराम चिह्न और उनके प्रयोग का ज्ञान हो;

4 उसे अक्षरों के आकार, तिरछेपन और बीच के स्थान का ज्ञान हो;

5 वह अभिव्यक्ति में सही शब्दों का प्रयोग कर सके;

6 उसे विचारों की संयुक्तता तथा उनको क्रमबद्ध ढंग से लिखने का ज्ञान हो;

ख) विद्यार्थी में निजी पत्र, साधारण आवेदन पत्र लिखने की क्षमता विकसित करना, जिससे :

1 उसे आवेदन पत्र के आरम्भ, मध्य, अन्त व पता लिखने की सही विधि का ज्ञान हो;

2 उसे सुव्यवस्थित विचारों को अनुच्छेदों में लिखने की क्षमता प्राप्त हो ।

ग) विद्यार्थी में सृजनात्मक लेखन के लिए योग्यता पैदा करना, जिससे वह :

1 किसी वास्तविक या काल्पनिक घटना या दृश्य का वर्णन कर सके;

2 दिए हुए संकेतों से कहानी विकसित कर सके;

3 आधी कहानी को पूरा कर सके;

4 अपने विचारों को अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सके।

पाठ्यक्रम

पहली तथा दूसरी कक्षा (प्रथम भाषा)

नोट :–

(क) पहली व दूसरी कक्षा को एक ही ग्रेड (श्रेणी) माना गया है, जिसका मिला–जुला (सांझा) एक पाठ्यक्रम होगा । पर सरलता के लिए इसको दो भागों में बाँट लिया गया है । अध्यापक और भी आगे इसको इकाइयों में बाँट सकता है ।

(ख) बच्चे के वर्तमान स्तर का निर्णय उसके उस ग्रेड में पढ़ने के समय से नहीं, अपिनु विभाजित इकाइयों को सम्मुख रखकर किया जाए। उसकी प्राप्तियों के मूल्यांकन का आधार भी पहले और दूसरे भाग में, सम्बन्धित इकाइयों को पूरा करने के उपरान्त, उसके मानसिक स्तर और योग्यता को बनाया जाये ।

(ग) प्रत्येक श्रेणी का यह पाठ्यक्रम एक विशाल संकेत और स्तर निधारित करता है । ऐसा भाषा की पढ़ाई के सम्बन्ध में होना स्वाभाविक है। पाठ्य–सामग्री, शैक्षिक – अनुभव और क्रियाकलाप के विस्तार अध्यापक ने स्वयं अपने साधनों और बालक की स्कूल जाने से पहले की घरेलू अवस्था की जानकारी को सम्मुख रखकर तैयार करना है ।

(घ) प्राइमरी श्रेणियों में नये शैक्षिक अनुभव प्रदान किये जाते हैं। इन अनुभवों को एक या दो श्रेणियों में दोहराना काफी होता है

कक्षा –1 (प्रथम भाषा)

मौखिक अभिव्यक्ति : विद्यार्थी में ऐसी योग्यता का विस्तार करना जिससे वह :

1 हिंदी की सभी ध्वनियों की चित्र देखकर पहचान कर सके ;

2 हिंदी की मिलती – जुलती ध्वनियों की पहचान कर सके;

3 हिंदी की मात्राओं की पहचान कर सके ;

4 अनुस्वार और अनुनासिक में भेद कर सके ;

5 मौखिक निर्देशों को समझ सके ;

6 अपने परिवेश/पर्यावरण की जानकारी प्राप्त कर सके ।

7 घर और समाज में विचरते हुए नैतिक मूल्यों जैसेः प्रेम, सहानुभूति, आदर, परिश्रम की पहचान कर सके ;

8 चित्र देखकर बात कर सके;

9 समूह में या व्यक्तिगत रूप से हाव – भाव के साथ कविता का उच्चारण कर सके।

पढ़ाई : विद्यार्थी में ऐसी योग्यता का विस्तार करना जिससे वह :

1 चित्र देखकर हिंदी वर्णमाला को पढ़ सके ;

2 निर्धारित पाठ्य – पुस्तक में से शब्दों और वाक्यों को स्पष्ट रूप से पढ़ सके ;

3 अपने परिवेश से नये शब्द पढ़ सके ।

लिखाई : विद्यार्थी में ऐसी योग्यता का विस्तार करना जिससे वह :

1 लिखने के लिए सही मुद्रा में बैठ सके ;

2 लिखने से सम्बन्धित सामग्री का ठीक प्रयोग करने के योग्य हो सके ;

3 देवनागरी लिपि के चिह्नों को सही –सही लिखने के योग्य हो सके ;

4 स्पष्ट और आनुपातिक (एक सार) अक्षर लिखने के योग्य हो सके ;

5 शब्दों में आई ध्वनियों को अलग कर सके ;

6 ब्लैकबोर्ड से और पाठ्य – पुस्तक में से शब्दों और वाक्यों को देखकर लिख सके।

पाठ्य – पुस्तक : हिंदी पुस्तक –1 (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित)

कक्षा – 2
2 (प्रथम भाषा)

मौखिक अभिव्यक्ति

विद्यार्थी :

1 बात सुनकर उसको सही – सही आगे बताने के योग्य हो ;

2 वक्ता की आवाज़ के उतार – चढ़ाव से ही कथनों, प्रश्नों और विस्मय प्रकट करने वाले वाक्यों की पहचान कर सके;

3 आवाज़ के उतार – चढ़ाव से ही खुशी, आश्चर्य, क्रोध आदि भावों की अभिव्यक्ति करना :

4 आवाज़ के उचित – चढ़ाव और हाव – भाव से समूह – गान, कविता पाठ करना और कहानी कहना आदि में भाग ले सकने के योग्य हो सके ;

5 बोलते समय भाषा के प्रामाणिक रूप को अपनाने की ओर प्रेरित हो ।

पढ़ाई :

1 निर्धारित पाठ्य – क्रम में से साधारण वाक्यों को ऊँचा बोलकर, उसमें प्रयुक्त विराम – चिह्नों (बल, ठहराव आदि) को बोलकर महसूस करना;

2 ज़ोर से पढ़ते समय विराम – चिह्नों, अर्द्ध विराम, पूर्ण विराम आदि के प्रति सावधानी का प्रयोग;

3 वाक्यों को उचित और अर्थ पूर्ण शब्द – खण्डों में बाँटना

4 कहानियों, कथनों, वार्तालापों और कविताओं को समझ से पढ़ना;

5 जाने–पहचाने शब्दों के संयुक्त अक्षरों को साथ पढ़ना;

6 पहले सीखे हुए शब्दों के अलावा 200 से 250 तक नये शब्दों को ग्रहण करना। यह शब्दावली बच्चे के घर, पड़ोस और स्कूल में उन वस्तुओं, घटनाओं आदि के बारे में हो, जिनमें बच्चों की रूचि हो ।

लिखाई : विद्यार्थी में लिखने की योग्यता का विस्तार करना जिससे वह :

1 लिखते समय आँखों और हाथों की हरकतों में सांमजस्य पैदा कर सके ;

2 वर्णों के रूप, आकार, तिरछापन और एकसारता द्वारा लिखाई में सुधार कर सके;

3 पेन्सिल, कलम या स्लेटी से कॉपी , तख़्ती या स्लेट पर स्पष्ट लिखाई के योग्य हो;

4 छोटे और साधारण वाक्यों के श्रुतलेख और प्रतिलेखन के योग्य हो;

5 दिए हुए शब्दों को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कर सके ।

पाठ्य – पुस्तक : हिंदी पुस्तक –2 (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित)

कक्षा : 3

2. हिंदी (प्रथम भाषा)

मौखिक अभिव्यक्ति :

विद्यार्थी :

1 अपने साथियों या बड़ों से बातचीत करते समय शिष्ट शब्दावली का प्रयोग करें:

2 याद की हुई कहानी या कविता को प्रभावशाली ढंग से सुना सके:

3 सुनी या पढ़ी हुई कहानियाँ अपने शब्दों में ठीक तरह से सुना सके।

4 निजी अनुभवों को कहानी के रूप में सुना सके:

5 आँखों देखी घटनाओं का वर्णन कर सके:

6 साधारण और स्पष्ट भाषा में नित्य-प्रति के कामों के बारे में बता सके:

7 उचित ठहराव और हाव-भाव प्रकट करने वाले बोली के ढंगों, विराम-चिह्नों आदि का प्रयोग करते हुए बोली के मानक रूप का प्रयोग कर सके।

पढ़ाई :

1 उचित उच्चारण, ठहराव और बल आदि के साथ पाठ्य-पुस्तक के अनुच्छदों को ऊँचा बोलकर पढ़ सकें:

2 चुपचाप मुँह में पढ़ सकें:

3 एक या दो पूरक-रीडर पढ़ने के योग्य हो सकें:

4 200 से 250 तक नए शब्द सीख सकें:

लिखाई : विद्यार्थी में निम्नलिखित योग्यताओं का विस्तार करना :

1 साधारण शब्दों और वाक्यों को पाठ्य -पुस्तक में से चुनकर लिखना:

2 परिचित वाक्यों में खाली स्थानों की पूर्ति करना

3 नए शब्द बनाना

4 नए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करना:

5 दैनिक जीवन में घटित घटनाओं को साधारण वाक्यों में लिखना:

6 व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान प्रदान करना

7 मेरा घर, मेरा अध्यापक, मेरा मित्र, मेरा स्कूल, मेरी गाय से सम्बन्धित विषयों के प्रति रुचि बढ़ाना और उन्हें छोटे-छोटे क्रमबद्ध वाक्यों में लिखना।

पाठ्य-पुस्तक : हिंदी पुस्तक-3

(पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित)

कक्षा : 4

हिंदी (प्रथम भाषा)

मौखिक अभिव्यक्ति :

विद्यार्थी में निम्नलिखित योग्यताओं का विस्तार करना:

1 भाषा के सुन्दर और शिष्ट रूप का प्रयोग:

2 स्कूल या किसी अन्य सभा में भाषण करना:

3 कहानी, चुटकले सुना सकना और पहेलियाँ डालनी तथा उनके उत्तर देना:

4 स्कूल, गाँव या कस्बे में घटित घटनाओं को वर्णित करना:

5 प्रभावशाली ढंग से कविता पाठ करना:

6 सरल वार्तालाप या भाषण मुकाबलों में भाग लेना:

7 जीवन की साधारण झाँकियों की नकल उतारनी या छोटे-छोटे नाटकों में अभिनय करना:

8 उचित गति और बोली के बीच ठहराव, बल, हाव-भाव, आदि का सही प्रयोग और बोलते समय मानक बोली का प्रयोग।

पढ़ाई :

विद्यार्थी में निम्नलिखित योग्यताओं का विस्तार करना:

1 सही उच्चारण और बढ़िया ढंग से पाठ्य-पुस्तक में से वार्ता और कविता के अंशों को बोलकर पढ़ना:

2 चुपचाप उचित / तीव्र गति और ठीक समझ से पढ़ना:

3 दो पूरक-रीडर पढ़ना। रुचि के समाचार-पत्र तथा बालकों के लिए लिखी गई पुस्तकों आदि को पढ़ने के प्रति प्रेरित होना:

4 पहले सीखे हुए शब्दों के अतिरिक्त 200 से 250 तक नए शब्द सीखना। बच्चों को शब्दकोश प्रयोग के लिए प्रेरित करना।

लिखाई : विद्यार्थी में निम्नलिखित योग्यताओं का विस्तार करना :

1 श्रुतलेख लिखने के योग्य हो सके:

2 पढ़े हुए पाठ से साधारण प्रश्नों के उत्तर दे सके:

3 कविता की पंक्तियाँ पूरी कर सके।

4 पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ लिख सके।

5 संक्षिप्त वाक्य बना सके।

6 मुहावरों का प्रयोग कर सके

7 व्यावहारिक व्याकरण

8 चित्र देख कर समझ अनुसार वाक्य लिखना

9 अपने शब्दों में सरल कहानियाँ लिख सके, दो मित्र और भालू, लालची कुत्ता, प्यासा कौआ, दो बकरियाँ

10 माता-पिता, मित्रों और रिश्तेदारों को साधारण पत्र लिखने के योग्य हो तथा इनमें:

(क) पता और पत्र लिखने की तारीख

(ख) पता लिखने की विधि,

(ग) पत्र लिखने की विधि

(घ) पत्र के विषय में आरम्भ, विस्तार, पत्र का अन्त आदि स्पष्ट रूप में समझ सके।

पत्र

1) बीमारी के कारण स्कूल के अध्यापक / मुख्याध्यापक / प्रधान अध्यापक को प्रार्थना पत्र।
2) कोई ज़रूरी काम होने के कारण स्कूल से अवकाश लेने के लिए प्रार्थना पत्र।
3) मित्र / सहेली को जन्म दिन की बधाई देते हुए पत्र।
4) मित्र / सहेली को अपने जन्म दिन पर निमंत्रण पत्र।

11 घर, परिवार, स्कूल, मित्र /रिश्तेदार से सम्बन्धित छोटा सा लेख लिख सकें:

लेख

मेरा मित्र, मेरा प्रिय अध्यापक, मेरा स्कूल, मेरे घर का बगीचा, मेरी माँ

पाठ्य-पुस्तक : हिंदी पुस्तक-4
(पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित)

कक्षाः चौथी
हिंदी (द्वितीय भाषा)
(चौथी कक्षा के लिए)

इस स्तर पर भाषा-शिक्षण का यह उद्देश्य होना चाहिए कि बालक को प्राइमरी के पाँचवें वर्ष के अन्त तक हिंदी (द्वितीय भाषा) की पढ़ाई द्रुत-गति से प्राप्त करने की प्रेरणा दी जाये तथा अपने आपको अभिव्यक्त करने का सुअवसर प्रदान किया जाए। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है:-

मौखिक अभिव्यक्तिः

विद्यार्थी में ऐसी योग्यता का विस्तार करना जिससे वहः

1. हिंदी की सभी ध्वनियों की चित्र देखकर पहचान कर सकेः
2. हिंदी की मिलती-जुलती ध्वनियों की पहचान कर सकेः
3. हिंदी और पंजाबी की ध्वनियों की समानता और विभिन्नता की पहचान कर सकेः
4. हिंदी की मात्राओं की तुलना पंजाबी की मात्राओं के साथ कर सकेः
5. पंजाबी में प्रयोग होने वाली बिन्दी (ं) और टिप्पी (ँ) के स्थान पर हिंदी में अनुस्वार और अनुनासिक का प्रयोग कर सकेः
6. हिंदी में दिए गए मौखिक निर्देशों को समझ सकेः
7. अपने परिवेश/पर्यावरण की जानकारी प्राप्त कर सकेः
8. घर और समाज में विचरते हुए नैतिक मूल्यों जैसे : प्रेम, सहानूभूति, आदर, परिश्रम आदि की पहचान कर सकेः
9. चित्र देखकर बात कर सकेः
10. समूह में या व्यक्तिगत रूप से हाव-भाव के साथ कविता का उच्चारण कर सके।

पढ़ाईः

विद्यार्थी में ऐसी योग्यता का विस्तार करना जिससे वहः

1. चित्र देखकर हिंदी वर्णमाला पढ़ सकेः
2. निर्धारित पाठ्य-पुस्तक में शब्दों और वाक्यों को स्पष्ट रूप से पढ़ सकेः
3. अपने परिवेश से नये शब्द पढ़ सकेः

लिखाईः

विद्यार्थी में ऐसी योग्यता का विस्तार करना जिससे वहः

1. देवनागरी लिपि के चिह्नों के सही रूप व आकार की जानकारी प्राप्त कर सकेः
2. हिंदी पंजाबी शब्दों की समानता एवं भिन्नता को समझकर हिंदी शब्दों को लिख सकेः
3. गुरुमुखी लिपि में दिये गये वाक्यों को देवनागरी लिपि में लिख सकेः

4. सरल शब्दों एवं संक्षिप्त वाक्यों की प्रतिलिपि और श्रुतलेख लिख सके:

5. बहुत छोटे-छोटे वाक्य बना सके:

6. दिए गए शब्दों का प्रयोग करते हुए कुछ वाक्य / गद्यांश पूरा कर सकें:

पाठ्य-पुस्तक : आओ हिंदी सीखें -4

(पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित)